इस्लाम धर्म शास्त्र

लेखक : जनाब सैय्यद लियाक़त हुसैन हिन्दी बनारसी
अनुवादक : जनाब सैय्यद जाफ़र असर नक़वी साहब जायसी

क़िस्त : 4

फ़ुरू-ए-दीन

अर्थात् धर्म की शाखाएं 7 हैं।

(1) नमाज़ (प्रार्थना)। (2) रोज़ा (व्रत)।
(3) हज (तीर्थ यात्रा)। (4) ज़कात (दान)।
(5) खुम्स। (6) जिहाद (धार्मिक युद्ध)
(7) अम्र बिल मारूफ़ व नही अनिल मुनकर (अच्छे कार्यों का आदेश देना तथा बुरे कार्यों से रोकना)।

नमाज़ का वर्णन

नमाज़ का समयः—प्रति दिन 5 समय की नमाज़ पढ़ना अनिवार्य है। (1) प्रातः काल की नमाज़ 2 रकात (इसका समय प्रातः काल से सूर्योदय के पूर्व तक रहता है।) (2) जुहर (मध्यकालीन) की नमाज़ चार रकात (इसका समय 1 बजे से लेकर 3 बजे तक रहता है।) (3) अस्र की नमाज़ 4 रकात (इसका समय 3 बजे के बाद से सूर्योदय तक रहता है।) (4) मग़रिब की नमाज़ 3 रकात (इसका समय सूर्यास्त से लेकर इशा की नमाज़ तक का प्रारम्भ होने तक रहता है।) (5) इशा (रात्रि कालीन) की नमाज़ 4 रकात (इसका समय मग़रिब की नमाज़ के तुरन्त बाद ही से आरम्भ हो जाता है)।

(नोटः—मग़रिब तथा इशा की नमाज़ के मध्य में केवल एक तस्बीह का अन्तर बताया गया है। अस्र की नमाज़ का समय तब आरम्भ होता है जब अपना प्रतिबिम्ब अपने से दूना हो जाए। संशोधक)

वाजिबी नमाज़ (अनिवार्य नमाज़)ः—(1) प्रति दिन की पांचों समय की नमाज़। (2) नमाज़ जुमा। (3) ईद की नमाज़। (4) ईद—ए—कुर्बा (बक़रईद की नमाज़)। (5) नमाज़ तवाफ़—ए—काबा (काबे के चहु ओर घूमने की नमाज़) । (6) नमाज़—ए—आयात, (सूर्य तथा चन्द्र ग्रहण, काली आंधी तथा भूकम्प के समय की नमाज़)। (7) नमाज़—ए—मय्यत (मृतक के शव पर पढ़ी जाने वाली नमाज़)। (8) नमाज़ क़ज़ा (नमाज़ छोड़ देने की—उनकी पूर्ति के लिए)। (9) नमाज़ (क़सम) शपथ ग्रहण करने से। (10) नमाज़ प्रतिज्ञा करने से। (11) नमाज़ इजारा (पैसा लेकर किसी की क़ज़ा नमाज़ पढ़ना)। (12) पिताकी मृत्यु के पश्चात् पिता के द्वारा क़ज़ा की हुई नमाज़ जिसका पढ़ना सबसे बड़े पुत्र पर अनिवार्य है।

सुन्नती नमाज़ (पुन्य दायक, नमाज़/वान्छनीय)ः—(1) प्रत्येक दिन की सुन्नती नमाज़। (2) वह नमाज़ जो हज़रत मुहम्मद साहब से सम्बन्धित है। (3) हज़रत अली अ0 से सम्बन्धित नमाज़। (4) हज़रत फ़ातिमा से सम्बन्धित नमाज़। (5) नमाज़ जाफ़र—ए—तय्यार अ0 (6) नमाज़ आराबी (7) वर्षा के हेतु नमाज़ (8) नमाज़ ईद—ए—ग़दीर (9) नमाज़ प्रथम दिवस प्रत्येक मास (10) रमज़ान की नाफ़िला पुण्य दायक (11) नमाज़ रोज़े मबअस (12) नमाज़ मबअस को रात की (जिस दिन रसूल ने अपनी रिसालत की घोषण की) (13) नमाज़ रोज़—ए—मुबाहिला (ईसाइयों से शपथ ग्रहण /वाद विवाद का दिन) (14) नमाज़ ज़ियारत (15) नमाज़ रग़ायब (16) 15 रजब की रात्रि की नमाज़ (17) रमज़ान की ईद की रात्रि की नमाज़ (18) नमाज़े ग़फ़ैला (19) नमाज़ हदिय—ए—मय्यत (मृतक के लिए) (20) यात्रा आरम्भ करने के पूर्व की नमाज़ (21) नमाज़ तौबा (22) नमाज़े आशूरा (23) नमाज़ नौरोज़।

नमाज़ आरम्भ करने के पूर्व का कार्य

(1) हृदय से स्वच्छ (पवित्र) होना (2) गन्दगी दूर करना (3) अपना आगा—पीछा वस्त्र से छुपाना (4) नमाज़ पढ़ने का स्थान अपवित्र न हो तथा किसी से छीना हुआ न हो (5) नमाज़ का समय देखना (6) किबला (काबा) की दिशा ज्ञात करना।

नमाज़ का वस्त्र

(1) वस्त्र चोरी का या किसी से छीना हुआ न हो (2) रेशमी न हों (यह स्त्रियों पर लागू नहीं होता) (3) शरीर में सोने की अंगूठी अथवा अन्य कोई वस्तु न हो (4) वस्त्र पवित्र हों (5) ऐसे पशु की खाल न हो जिसका मास खाना निषेध है।

नमाज़ का स्थान

(1) नमाज़ पढने का स्थान छीना हुआ न हो अथवा स्थान के स्वामी की आज्ञा लेना अनिवार्य है। (2) अपवित्र न हो। नमाज़ पढ़ने के पूर्व हर प्रकार की अपवित्रता से शरीर तथा वस्त्र का पवित्र होना एंव नमाज़ आरम्भ करने के पूर्व वुज़ू अथवा तयम्मुम कर लेना आवश्यक है।

वुज़ू करने की विधि

सर्व प्रथम पवित्र जल से दोनों हाथों को गट्टे तक दो बार धोए, फिर तीन बार कुल्ली करे फिर तीन बार नाक में पानी डाले फिर वुज़ू की नीयत इस प्रकार करे कि "वुज़ू करता हूं मैं वास्ते दूर होने हदस के और मुबाह होने नमाज़ के वाजिब कुरबतन इलल्लाह" अतः साथ ही नियत के एक चुल्लू पानी दाहिने हाथ पर से मुख पर डाले इस प्रकार कि मस्तक के आरम्भ होने से ठूड्डी के नीचे तक और चौड़ाई में दोनों कान की जड़ के निकट तक धोयें। इसके पश्चात दाहिने हाथ की कोंहनी के कुछ ऊपर से उंगलियों के सिरे तक धोंये इसके उपरान्त सिर का मसह करे अर्थात् हाथ की (गीली) उंगलियां तालू से बालों के अन्तिम सिरे तक आगे की ओर खींचे इसके पश्चात दाहिने पांव का दाहिने हाथ से तथा बाएं पांव का बायें हाथ से दोनों पांव की उंगलियों से गट्टे तक मसह करे।

वाजिब वुज़ू

(1) नमाज़ पढ़ने के हेतु (2) खाना–ए–काबा का तवाफ़ करते समय (3) शरीर के किसी भाग को कुर्आन से छुलाने के पूर्व वुज़ू करना अनिवार्य है।

सुन्नती वुज़ू

(1) कुर्आन पढ़ने के पूर्व, (2) कुर्आन उठाने, (3) मस्जिद में प्रवेश करने, (4) नमाज़–ए–मय्यत पढ़ने, (5) आवश्यकता की सफलता के लिए, (6) ज़ियारत क़ब्रे–ए–मोमिन, (7) सोते में स्वप्नदोष होने पर, (8) नकसीर फटने पर (9) वमन (क़ै) होने पर (10) दांत से रक्त निकलने पर वज़ू करना (11) सर्वदा वज़ू के साथ रहना पुण्यदायक है।

वुज़ू भंग करने वाली वस्तुएं

(1) मूत्र आना। (2) शौचालय जाना। (3) मूत्र के स्थान से लेसदार द्रव्य (वीर्या) निकलना। (4) हवा (रियाह) का खुलना। (5) निद्रा में सो जाना। (6) मूर्छा एंव मस्ती का होना। (7) शव को छूना। (8) स्वप्नदोष हो जाना। (9) स्त्रियों के मासिक धर्म का आना एंव बच्चा जनने के समय रक्त के प्रवाहित होने से वुज़ू भंग हो जाता है अर्थात् पुनः वुज़ू करना अनिवार्य है

ग़ुस्ल (स्नान) का वर्णन

गुस्ल वाजिबीः– (अनिवार्य स्नान) (1) जनाबत, स्वप्न दोष होने अथवा सम्भोग करने पर। (2) शव का स्नान। (3) शव स्पर्श करने का स्नान (ये तीन स्नान पुरूष तथा स्त्री दोनों से सम्बन्धित हैं) (4) स्त्री के मासिक धर्म का स्नान। (5) बच्चा जनने के पश्चात् का स्नान (6 इस्तेहाजा का स्नान (अन्तिम तीन स्नान स्त्रियों से सम्बन्धित हैं।

गुस्ल सुन्नती(पुन्य दायक स्नान):–(1) जुमा के दिन का स्नान, रमज़ान मास की फुट रात्रि का स्नान (21, 23, 25, 27, 29) (3) ईद की रात्रि का स्नान (4) बक़ीद की रात्रि का स्नान (5) ईद तथा बकरीद के दिन का स्नान (6) 15 रजब (7) 15 शाबान (8) 27 रजब (रोज मबअस) (9) रसूल का जन्म दिवस : 17 रबीउल अव्वल (10) मुबाहिले के दिन, 24 बक़रीद (11) जिस दिन सर्व प्रथम पृथ्वी बिछाई गई अर्थात् (25 ज़ीकादा), (12) ईद–ए–ग़दीर (18 बक़रीद) (13) अरफ़ा दिवस (9 बक़रीद) (14) तरविया के दिन 8 बक़रीद (17) नौरोज़ (21 मार्च) (18) एहराम बांधने के समय (हज तथा उमरा) (17) तवाफ–ए–खान–ए–काबा (18) चौदह मासूमों की क़ब्र की ज़ियारत के समय (19) तौबा करने के समय (20) मक्का के हरम में प्रवेश करने के समय (21) मक्का में प्रवेश करने के समय (22) मस्जिदुल हराम में प्रवेश करने के समय (23) खाना–ए–काबा में प्रवेश करने के समय (24) आवश्यकता की पूर्ति के समय (25) इस्तिखारा करते समय (26) बच्चा पैदा होने पर (27) वर्षा होने के हेतु (28) सूर्य तथा चन्द्रग्रहण की अनिवार्य नमाज़ पढ़ने के समय (29) यदि किसी व्यक्ति का गला घूंटा गया हो और उसे देख कर लौटे तों गुस्ल करे (30) छिपकली मरने के पश्चात (31) पागल होने के पश्चात यदि होश

आए तो गुस्ल करे (32) शव को कफ़न पहनाने और दफ़न करके लौटने के पश्चात इत्यादि।

गुस्ल जनाबत

यह दो प्रकार का होता है। एक तो स्वप्नदोष में वीर्य पात होने पर। दूसरे स्त्री के साथ सहवास करने के पश्चात, वीर्य पतन हुआ हो अथवा नहीं ऐसी दशा में गुस्ल करना अनिवार्य है। इस स्नान को गुस्ले जनाबत कहते हैं इस स्नान के पश्चात नमाज़ के लिए वज़ू इत्यादि की आवश्यकता नहीं है। इस स्नान के दो नियम हैं। (1) तरतीबी (2) इरतमासी।

(1) गुस्ल जनाबत तरतीबीः—सर्व प्रथम शरीर को स्वच्छ करके पवित्र करे तत्पश्चात नीयत करे कि "गुस्ल जनाबत करता हूं वास्ते दूर होने हदस के और मुबाह होने नमाज़ के वाजिब कुर्बतन इलल्लाह" और नीयत के साथ ही सिर तथा गर्दन को धोये इसके पश्चात दाहिनी ओर गर्दन से पांव की उंगलियों तक (आधा शरीर) इस प्रकार धोये कि समस्त नाक कान तथा बाल की जड़ तक पानी पंहुच जाये इसी प्रकार दूसरी ओर भी धोये यदि हाथ में अंगूठी छल्ला इत्यादि हो तो उसको भी उतार देना चाहिए। यदि नदी तालाब या हौज़ में गुस्ल तरतीबी करना चाहे तो शरीर को गन्दगी से पवित्र करके नियत करे फिर सिर तथा गर्दन को डुबाने के लिए डुबकी लगाये। फिर दूसरी बार शरीर के दाहिने भाग के विचार से डुबकी लगाये। फिर तीसरी बार शरीर के बाएं अंग के विचार से डुबकी लगाए।

(2) गुस्ल जनाबत इर्तिमासीः—सर्व प्रथम शरीर को पवित्र करे तत्पश्चात नीयत करे कि "गुस्ल जनाबत इरतमासी करता हूं वास्ते दूर होने हदस के व मुबाह होने नमाज़ के वाजिब कुर्बतन इलल्लाह "हर प्रकार के स्नान की यही विधि है के वहां मय्यत (शव) के स्नान की विधि (प्रथक है। नीयत के साथ सम्पूर्ण शरीर को पानी में ग़ोता दे।

स्त्रियों के स्नान (गुस्ल)

स्त्रियों के लिए गुस्ल जनाबत के अतिरिक्त और तीन प्रकार के गुस्ल अनिवार्य हैं। परन्तु इन स्नानों के साथ नमाज़ इत्यादि के लिए वुज़ू आवश्यक है।

(1) गुस्ले हैज़ (मासिक धर्म का स्नान) स्त्रियों के युवावस्था पर पंहुचने के समय प्रत्येक मास खरी ईंट की समान लाल रक्त वेग के साथ उछल कर तीन दिन से कम तथा दस दिन से अधिक नहीं आता इसको खूने हैज़ (मासिक धर्म) कहते हैं। इस के बन्द होने पर गुस्ल अनिवार्य है। नीयत इस प्रकार करे कि गुस्ल हैज़ करती हूं वास्ते दूर होने हदस के और मुबाह होने नमाज़ के वाजिब कुर्बतन इलल्लाह" फिर सिर तथा गर्दन पानी से धोये उसके पश्चात शरीर का दायाँ भाग गर्दन से पैर की उंगलियों तक धोये फिर इस प्रकार बायाँ भाग धोये यदि नदी, तालाब अथवा हौज़ में डुबकी लगाना होतो प्रथम सिर तथा गर्दन के विचार से फिर शरीर के दायें भाग फिर बायें भाग के विचार से पानी में डुबकी लगाए।

(2) गुस्ले निफ़ास (प्रसव रक्त का स्नान) बच्चा उत्पन्न होने (प्रसूति) के पश्चात एक अथवा दो अधिकतम 10 दिन तक रक्त प्रवाहित होता रहता है वह निकास है जब बन्द हो जाए तो तुरन्त स्नान अनिवार्य है इसके पश्चात नमाज़ तथा रोज़े का कार्य करना चाहिए ऐसी अवस्था में छटी चिल्ला का सम्पन्न करने का ध्यान रखना तथा स्त्री को अपवित्र समझना असत्य है। हैज़ तथा निफ़ास के समय तक नमाज़ की क्षमा है। परन्तु पवित्र होने के पश्चात रोज़ा तथा नमाज़ की 'क़ज़ा' (छूटा हुआ पूरा करना) आवश्यक है।

(3) गुस्ले इस्तेहाज़ाः—जो रक्त हैज़ तथा निफ़ास के अतिरिक्त रोग के रूप में अधिकांश पीला पन लिए हुए, ठण्डा, पतला अनिश्चित समय तक प्रवाहित हुआ करे उसको इस्तेहज़ा कहते हैं इसकी तीन दशाएं हैंः—

(1) क़लीला (थोड़ा)
(2) मुतवस्सिता (माध्यमिक)
(3) क़सीरा (अधिक)

(1) क़लीलाः— जब रक्त से सम्पूर्ण रूई न भरे तो नमाज़ के पांचों समय रूई बदलना, शरीर को पवित्र करना और वज़ू करना आवश्यक है।

(2) मुतवस्सिताः—जब रक्त से पूरी रूई भर जाए तो नमाज़ के पांचों समय रूई बदलना, शरीर को पवित्र करना, वज़ू करना प्रातः काल की नमाज़ के समय स्नान करना अनिवार्य है। और यदि रोज़ा रखना है तो इसी स्नान को प्रातः काल से पूर्व करना चाहिए।

(3) कसीराः—जब रक्त इतना अधिक प्रवाहित हो कि रूई से फूट कर बाहर निकल आवे तो पांचों समय

के वज़ू के अतिरिक्त रूई बदलना, शरीर को पवित्र करना और प्रातः काल, ज़ुहर (दोपहर) अस्र तथा मग़रिब (सांयकल तथा रात्रि) की नमाज़ के लिए स्नान करना अनिवार्य है। इस्तेहाज़ा की दशा में नमाज़ रोज़ा नहीं छोड़ना चाहिए, यदि स्नान करने से पानी हानि पंहुचाता हो तो तयम्मुम कर लिया करें।

गुस्ले मय्यतः—(शव का स्नान) मृतक के शव को इस प्रकार चित लिटाए कि उसके पैर काबे की और हों और अपवित्रता को दूर कर के समस्त शरीर को उस तख़ते के साथ जिस पर गुस्ल देते हैं पवित्र कर के और थोड़ी सी बेर की पत्तियां हाथ से मलकर पानीं में उसका रस डालें और यह नियत करें कि मैं इस शव को आबे सदर का गुस्ल देता हूं रज़ाये खुदा के लिए और फिर शव के सिर तथा गर्दन को धोयें और शरीर के समस्त भाग पर पानी पंहुचाये तदोपरान्त दायीं ओर आधा शरीर गर्दन से पांव की उंगली तथा नख तक धोये और समस्त भागों तक पानी पंहुचाए इसी प्रकार बायी ओर आधा शरीर धोये तत्पश्चात थोड़ा सा कपूर ले और हाथों में मलकर पानी में मिलाए और यह नीयत करे कि "इस मय्यत को आबे काफ़ूर का गुस्ल देता हूं रज़ाये खुदा के लिए" और सिर तथा गर्दन काफ़ूर के जल से धोये तदोपरान्त उसके दहनी और गर्दन से पावों की नख तक आधा शरीर धोयें इसी प्रकार बायीं ओर का आधा शरीर धोये फिर इसके पश्चात केवल शुद्ध जल से गुस्ल दे और यह नीयत करे कि "मैं इस मय्यत को आबे खालिस का गुस्ल देतो हूं खुश्नूदि–ए–खुदा के लिए" और शुद्ध जल से शव के सिर तथा गर्दन को धोकर दायीं और बायीं ओर का शरीर धोयें। पुरूष को पुरूष तथा स्त्री को स्त्री गुस्ले दें।

हुनूतः—स्नान के पश्चात शव को 'हुनूत' करना अनिवार्य है अर्थात मस्तक, दोनों हाथों की हथेली, दोनों घुटनों तथा दोनों पांव के नखों पर कपूर मले।

कफ़नः—हुनूत के पश्चात शव को कफ़न दे। (1) एक कफ़नी (2) एक लुंगी (3) एक बडी चादर यदि दो चादरें हों तो उत्तम है (4) पुरूष को अमामा (पगड़ी) एंव रान पेंच, स्त्री को मक़ना व सीना बन्द होतो उत्तम है।

गुस्ल मस–ए–मय्यत (शव स्पर्श का स्नान):—प्राण निकलने के पश्चात और शव को स्नान देने के पूर्व यदि शव का कोई भाग किसी व्यक्ति से स्पर्श हो जाये तो गुस्ल मस–ए–मय्यत अनिवार्य है।

नमाज़े मय्यत (शव की नमाज़):—कफ़न देने के पश्चात नमाज़े मय्यत पढ़ना प्रत्येक व्यक्ति पर अनिवार्य है।

दफ़न–ए–मय्यत (शव का गाड़ना):—(1) शव को क़ब्रे के भीतर दायीं ओर काबे की ओर मुख करके लिटाए (2) कब्र को इस प्रकार बन्द करे कि मृतक का शरीर मांसाहारी पशुओं से सुरक्षित रहे और उसकी दुर्गन्ध बाहर न आए (3) यदि जल यात्रा में समुद्र में मरे और पृथ्वी तक पंहुचना सम्भव न हो तो किसी बड़े घड़े या सन्दूक में मुख बन्द करके कोई भारी वस्तु शव से बान्ध कर लहद में लिटाने की भांति समुद्र में छोड़ देवे। क़ब्र को बन्द करने के पूर्व 'तलक़ीन' (प्रश्नोत्तर मुनकिर नकीर के लिए उपदेश) पढ़ना चाहिए।

तयम्मुम का वर्णन

यदि जल हानिकारक हो या अप्राप्य हो या वह जल ग़सबी (किसी का छीना हुआ) हो और नमाज़ का समय तंग हो तो 'गुस्ल' अथवा 'वज़ू' के स्थान पर तयम्मुम करना चाहिए।

तयम्मुम की विधिः—प्रथम नियत करे कि "तयम्मुम करता हूं बदले गुस्ल अथवा वुज़ू के वास्ते मुबाह होने नमाज़ के, वाजिब कुरबतन इलल्लाह' इसके पश्चात तुरन्त दोनों हाथों को एक बार मिट्टी पर मारे, उसके पश्चात हाथों को मिलाकर माथे के ऊपर से नाक तक खींचे, इसके पश्चात बाये हाथ की हथेली से दाहिने हाथ की पीठ पर गट्टे से उंगलियों के सिरे तक 'मसह' (स्पर्श) करे। तदोपरान्त इसी प्रकार बायें हाथ की पीठ पर दाहिने हाथ की हथेली से गट्टे से उंगलियों के सिरे तक 'मसह' करे। मिट्टी पर दो बार हाथ मारना उत्तम है प्रथम बार माथे के हेतु दूसरी बार हाथों के लिए।

नजासत (अपवित्र वस्तुएं)

(1) मूत्र (2) मल (मनुष्य का हो अथवा हराम पशुओं का) (3) रक्त (मनुष्य का अथवा उछल कर रक्त प्रवाह होने वाले पशुओं का) (4)वीर्य (मनुष्य का हो अथवा पशु का) (5) कुत्ता (6) सुवर (7) काफ़िर (जो इस्लाम धर्म का अनुयायी न हो) (8) मदिरा (वे मादक वस्तुऐं जो तरल हों और बहने वाली हों) (9) अंगूर का शीरा (जिसमें उबाल आजाए) (10) जौ की

मदिरा (11) मुदी (वीर्य पात होने के पूर्व जो एक प्रकार का तरल पदार्थ निकलता है—मनुष्य का हो अथवा उन पशुओं का जिन का रक्त ज़बह करते समय गर्दन की नाड़ी से उछल कर निकलता हो) (12) पसीना (वह पसीना जो (निषिद्ध/हराम) वीर्य पात के पश्चात निकले और उस समय तक अनिवार्य गुस्ल न किया गया हो।

पवित्र करने वाली वस्तुएं

(1) जल (2) पृथ्वी (3) सूर्य (4) अग्नि (5) इस्तेहाला+ (6) इन्तिक़ाल (7) इनक़िलाब (8) नक़्स (9) इस्लाम (10) ज़वाल–ए–ऐन (11) मसह व ताहिर (12) तबईयत

नमाज़ की विधि

वुज़ू करने के पश्चात जब नमाज़ पढ़ने का विचार करे तो प्रथम काबा की ओर मुख करके खड़ा हो जाए और निम्नलिखित ढंग से अज़ान तथा अक़ामत कहे।

अज़ान:—(1) चार बार उच्च स्वर से कहे 'अल्लाहु अक्बर' (अल्लाह सबसे बड़ा है) (2) फिर दो बार कहे 'अश्हदो अल् ला इला—ह इल्लल्लाह' (मैं साक्षी हूं कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई अन्य अल्लाह नहीं है) (3) फिर दो बार कहे 'अशहदो अन्ना मुहम्मदर रसूलुल्लाह' (साक्षी हूं कि निस्सन्देह मोहम्मद अल्लाह के रसूल हैं) (4) फिर दो बार कहे 'अशहदो अन्ना अमीरल मोमिनी—न व इमामल मुत्तक़ी—न अलीयँव वली युल्लाहि व वसीयु रसूलूल्लाहे व ख़लीफ़तुहु बिला फस्ल'। (साक्षी हूं कि निस्सन्देह अली अ0 मोमिनों के अमीर और मुत्तक़ियों के इमाम, अल्लाह के वली, मुहम्मद के वसी तथा ख़लीफा बिला फस्ल हैं) (5) फिर दो बार कहे "हय्या अलस्सलात" (नमाज़ के लिए तत्पर हो जाओ) (6) फिर दो बार कहे 'हय्या अललफलाह' (भलाई करने पर तत्पर हो जाओ) (7) फिर दो बार कहे 'हय्या अला ख़ैरिल अमल' (अत्याधिक सुन्दर कार्य करने को तत्पर हो जाओ) (8) फिर दो बार कहे 'अल्लाहु अक्बर' (अल्लाह सबसे बड़ा है) (9) फिर दो बार कहे 'ला इला—ह इल्लल्लाह' (अल्लाह के अतिरिक्त कोई दूसरा खुदा नहीं है।)

फिर बैठ जाए और यह दुआ पढ़े (प्रार्थना)

अज़ान के पश्चात की दुआ:—

"अल्ला हुम्मज अल क़लबी बारौं व ऐशी क़ारौं व अमली सारौं व रिज़्की दारौं व औलादी अबरारौं वज अल्ली इन्न्—द क़ब्रि नबीयि—क मुहम्मदिन सवल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम मुस्तक़र्रवं व क़रारवं बे रहमति—क या अरहमर्राहिमीन।"

अनुवाद:—हे ईश्वर ! मेरे हृदय को भला और मेरे सुख को सदैव रख और कार्य (कर्म) होता रहे, और मेरी जीविका सदैव दे और मेरे वालों को भलाई दे, और मेरे लिए अपने नबी मुहम्मद मुस्तफ़ा के समीप क़ब्र प्रदान कर, और उन पर अल्लाह की रहमत और दरूद हो और उनकी औलाद पर सलाम सदैव स्थिरता, तथा कृपा के साथ प्रदान कर, ए अधिक दयानिधन।

इस दुआ को पढ़ने के पश्चात इस प्रकार इक़ामत कहे:—

इक़ामत :— (1) "अल्लाहु अकबर" दो बार इसके पश्चात सभी अरकान (कार्य) अज़ान की भांति करे "हय्या अला ख़ैरिल अमल" के बाद दो बार 'क़द क़ा—मतिस्सलात' को अधिक करे और 'ला इला—ह इल्लल्लाह' को एक बार कहे इसके पश्चात नमाज़ आरम्भ करे।

नमाज़:—इक़ामत के पश्चात काबा की ओर मुख कर के सीधा खड़ा हो और इस प्रकार नीयत करे "नमाज़ पढ़ता हूं मैं (जैसे) सुबह की दो रिकात वाजिब क़ुर्बतन इलल्लाह" इसके पश्चात ही तकबीर अर्थात 'अल्लाहो अकबर' उच्च स्वर से कहे और दोनों हाथों को कानों तक ले जाए और फिर हाथों को नीचे गिराले और 'हम्द' का सूरा इस प्रकार पढ़े:—

'बिस्मिल्लाहिर रहमानिर् रहीम'

"अल्—हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन, अर् रहमानिर् रहीम, मालिकि यौमिद्दीन, इय्या—क नाबुदू व—इय्याका नस्—तईन, इहदिनस्सिरातल मुस्तक़ीम, सिरातल लज़ीन अन अम—त अलैहिम ग़ैरिल मग़ज़ूबि अलैहिम् वलज़्ज़ाल्लीन।"

अनुवाद:—आरम्भ करता हूं खुदा के नाम से जो समस्त सृष्टि पर दया करने वाला है। हर प्रकार की वन्दना अल्लाह के लिए है जो कुल संसार का पालने वाला है, प्रलय के दिन का स्वामी है, हम तेरी इबादत करते हैं और तुझी से सहायता चाहते हैं, और हमको सीधे मार्ग पर चला उनके मार्ग पर जिन पर तेरी नेमत (अच्छाई) उतरी, न कि उन लोगों का मार्ग जिन पर तूने अपना अज़ाब (प्रकोप/दुख) उतारा और न उनका

मार्ग जो पथभ्रष्ट हो गये हैं।

'अलहम्द' के पश्चात जो सूरा चाहे पढ़े अधिकार है। 'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम'

'इन्ना अनज़लना—हु फ़ी लै—लतिल् क़द्र व माअदरा—क फ़ी लैलतुल क़द्र। लै—लतुल् क़द्रि ख़ैरूम मिन अलफ़ि शहरिन, तनज़्ज़लुल मलाइ—क—तु वर रूहु फीहा बि ज़्नि रब्बिहिम मिन कुल्लि अमरिन सलामुन हिया—हत्ता मत—लइल फ़ज्र।'

अनुवादः—(बिस्मिल्लाह का अर्थ ऊपर लिखा जा चुका है) निस्सन्देह हमने कुर्आन को क़द्र की रात में उतारा और तू नहीं जानता की क़द्र की रात कैसी रात है, क़द्र की रात्रि उत्तम है हज़ार महीनों से, अपने पालने वाले के आदेश से इस रात्रि को मलायका (ईश्वर दूत) और रूह उतरते हैं। यह रात इबादत करने वालों के लिए हर कार्य में सुरक्षा का कारण है यहां तक कि प्रातः काल हो जाये।

फिर 'अल्लाहु अकबर' कह कर रूकूअ में जाय (घुटनों पर हथेली रखकर झुके) और उसी दशा में 3 बार 'सुब्हा—न रब्बि—यल अज़ीमि व बिहम्—दिह' कहे। (प्रत्येक बुराई से अपने पालने वाले को पवित्र जानता हूं जो उच्च पद रखता है, उसी की वन्दना करता हूं) फिर सीधा खड़ा हो और 'समि अल्ला—हु—लिमन हमिदह कहे (खुदा ने उस व्यक्ति की वन्दना को सुना जिसने वन्दना की) और फिर सीधा खड़ा होकर 'अल्लाहु अकबर' दोनों हाथों को कानों तक उठा कर कहे फिर हाथ गिरा कर सजदे में इस प्रकार जाए कि दोनों हाथों की हथेलियां धरती पर हों और मस्तक सजदगाह के ऊपर रखे और घुटनों को पैर से मिलाकर रखे और उसी दशा में तीन बार कहे 'सुब्हा—न रब्बि—यल आला व बिहमदिह (पवित्र जानता हूं मैं अपने पालने वाले को जो सर्वोच्च है, उसी की वन्दना में लीन हूं) तत्पश्चात सजदे से सिर उठाए ओर 'अल्लाहु अकबर' कह कर दोनों पैरों पर दो ज़ानू होकर जांघों को मिलाकर बैठे और दोनों हाथो को देनों जघाओं पर रखे और एक बार कहे 'अस्तग़्फ़िरू ल्ला—ह रब्बी व अतूबु इलैह (अपने पालने वाले से अपने पापों की क्षमा चाहता हूं) फिर पुनः सजदे में जाकर पहले की भांति 3 बार कहे 'सुब्हा—न रब्बि—यल आला व बिहम्दिही' फिर सजदे से सिर उठाये और बैठे और 'बि हौलिल्लाहि व—कूवति ही अक़ूमु व अक़उद कह कर खड़ा हो जाए (और मैं उसी की शक्ति से खड़ा होता हूं तथा बैठता हूं) प्रथम रकात समाप्त हुई।

द्वितीय रकातः—प्रथम रकात की भांति बिस्मिल्लाहि र्रहमानिर् रहीम' कह कर 'अलहम्द' का सूरा पढ़े उसके बाद कुलहु वल्लाह का सूरा पढ़ें।

बिसिमिल्लाहिर् रहमानिर् रहीम ''कुल हुवल्लाहो अहद, अल्लाहुस्समद, लम् यलिद वलम् यूलद, वलम यकुल्लहु कुफ़वन अ—हद।''

अनुवादः—'कह दो ए रसूल कि अल्लाह एक है और वह बेनियाज़ आवश्यकताओं से परे हैः किसी से कुछ नहीं चाहता) कोई उससे पैदा नहीं हुआ और न वह किसी से उत्पन्न हुआ (न वह जनक है, न जनित) और न कोई उसके जैसा है।'

इसके पश्चात दोनों हाथों की हथेलियों को मुख तक उठाए और दुआ—ए—कुनूत पढ़े।

''रब्बनग़फ़िर्ली वलि वालिदय्या वलिलमोंमिनी—न, यौ—म यक़ूमुल हिसाब। अल्लाहुम्मग़फ़िरलना वर्हम्ना व आफ़िना व अफ़ू—अन्ना फिद् दुन्या वल् आखिरह इन्न्—क अला कुल्लि शैइन क़दीर।'

अनुवादः—ऐ हमारे पालने वाले प्रलय के दिन हमको और हमारे माता पिता तथा समस्त मोमिनों को बख़्श दे (गुनाहों को ढांप दे) और लोक तथा परलोक में सुख प्रदान कर और परलोक में, निस्सन्देह तू प्रत्येक वस्तु पर प्रभुत्व रखने वाला (सर्वशक्तिमान) है।

कुनूत के समाप्त होते ही तुरन्त यह दरूद पढ़े :—

''अल्ला—हुम्—म स्वल्ले अला मुहम्मदि—व व आलि मुहम्मद।''

अनुवाद :—ऐ अल्लाह मुहम्मद और उनके वंशज पर सलवात हो।

इसके पश्चात प्रथम रकात की भांति रूकू और सजदा करे जब सजदे से सिर उठाए अल्लाहु अकबर कहकर दो ज़ानू होकर बैठे और इस प्रकार तशहहुद पढ़ेः—

'अश्—हदु अल्ला—इला—ह इल्लल्लाहु वह—दहु लाशरी—क लहू व अश्हदु अन्ना मुहम्मदन अबद—हु व रसूलुहु अल्ला हुम्—म सल्लि अला मुहम्मदिव व आलि मुहम्मद।'

अनुवादः—गवाही देता हूं कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई अन्य खुदा नहीं है, वह एक है और उसका कोई

साथी (साझाी) नहीं और गवाही देता हूं कि मुहम्मद उसके बन्दे (दास) और रसूल हैं ऐ अल्लाह ! मुहम्मद तथा उनके वंशज पर सलवात हो।

यदि नमाज़ दो रकात है तो इस के पश्चात इस प्रकार सलाम पढ़ेः–

'अस्सलामु अलै–क अय्युहन् नबीयु व रह–मतुल्लाहि व ब–रकातुह, अस्सलामु अलै–ना व अला इबादिल्लाहिस्सालिहीन, अस्सलामु अलैकुम व रह–मतुल्लाहि व ब–रकातुह।'

अनुवादः–ऐ पैग़म्बरे खुदा ! आप पर सलाम हो और अल्लाह की रहमतें व बरकतें हों, सलाम हो हम पर और खुदा के नेक बन्दों पर और सलाम हो सब पर और अल्लाह की रहमत तथा उसकी बरकत हो।

यदि नमाज़ तीन रकअती अथवा चार रकअती हो तो सलाम न पढ़े और तशहहुद पढ़ कर उठ खड़ा हो और केवल 'हम्द' का सूरा या तीन बार तस्बीहाते अर्–बआ (चार तस्बीह) : 'सुब्हानल्लाहि वल् हम्दु लिल्लाहि व ला इला–ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर्' पढ़े और प्रथम की भांति रूकू तथा दोनों सजदे करे। यदि नमाज़ तीन रकअती है तो तीसरी रकअत के पश्चात और यदि चार रकअती है तो चौथी रकअत के पश्चात तशहहुद पढ़ करे नमाज़ समाप्त कर फिर दोनों हाथों को कान तक ले जाकर 3 बार 'अल्लाहु अकबर' कहे। तत्पश्चात 'दरूद' और तस्बीह जनाबे सय्यदा पढ़े अर्थात अल्लाहु अक्बर 34 बार, 33 बार अल्–हम्दु लिल्लाहि तथा 33 बार सुब्हानल्लाह पढ़े। फिर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अल्लाह से दुआ मांगे। दुआ मांगना अनिवार्य है।

नमाज़–ए–आयातः–पांचों समय की भांति प्रत्येक व्यस्कों पर नमाज़–ए–आयात पढ़ना वाजिब (अनिवार्य) हैं यह नमाज़ निम्नलिखित अवसरों पर दो रकअत पढ़ना चाहिएः–

(1) सूर्य तथा चन्द्र ग्रहण लगने पर (2) भूकम्प आने पर (3) लाल अथवा पीली आन्धी आने पर तथा अन्य कोई घटना पर जिसके कारण लोग भयभीत हों, इत्यादि।

विधिः–प्रथम नीयत करे कि 'दो रकात नमाज़ पढ़ता हूँ सूर्य ग्रहण, चन्द्र ग्रहण अथवा भूकम्प की पढता हूं वाजिब कुरबतन इलल्लाह, नियत के पश्चात तुरन्त ही अल्लाहु अक्बर कहे और हम्द का सूरा तथा दूसरा सूरा पढ़कर रूकू में जावे और रूकू के पश्चात सीधा खड़ा हो तो फिर हम्द का सूरा और दूसरा सूरा पढ़कर कुनूत पढ़े फिर (दूसरे) रूकू में जाये फिर सीधा खड़ा हो और हम्द का सूरा और दूसरा सूरा पढ़कर दूसरा कुनूत पढ़े फिर चौथे रूकू में जाए फिर सीधा खड़ा होकर हम्द का तथा दूसरा सूरा पढ़कर पांचवें रूकू में जावे और सीधा खड़ा होकर समि अल्लाहुलिमन हमिदह' कह कर खड़ा हो फिर सजदे में जाए और दो सजदे करे। फिर सीधा खड़ा होकर हम्द का सूरा तथा दूसरा सूरा पढ़े, फिर कुनूत पढ़े फिर छटे रूकू में जाय फिर प्रथम की भांति 4 रूकूअ व दो कुनूत और पढ़े फिर रूकुअ के बाद सीधा ख़ड़ा होकर 'समिअल्लाहु लिमन हमिदह कहे' व दोनों सजदों के पश्चात तशहहुद व सलाम पढ़कर नमाज़ को समाप्त करे।'

नमाज़–ए–मय्यत (शव की नमाज़)

काबा की ओर मुख करके शव के समीप खड़ा हो और नीयत करे कि 'नमाज़–ए–मय्यत रिज़ाए खुदा के लिए पढ़ता हूं मैं कुरबतन इलल्लाह' और 'अल्लाहु अक्बर' कह कर यह दुआ पढ़ेः–

"अश्–हदु अल् लाइला–ह इल्लल्लाहु वह–दहु ल शरी–क लहु व अश्–हदु अन्ना मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलुह" तत्पश्चात फिर अल्लाहु अक्बर कहे और यह दुआ पढ़े "अल्ला हुम्–म सल्लि अला मुहम्मदिन्व व आलि मुहम्मद" तत्पश्चात तीसरी तकबीर (अल्लाहु अक्बर) कहे और यह दुआ पढ़ेः "अल्लाहुम्मग़फ़िर्–लिलमोमिनी–न वल् मोमिनाति वल मुस्लिमीःन वल मुस्लिमाति" तत्पश्चात चौथी तकबीर कहे और यह दुआ पढ़े यदि पुरूष का शव हो तो "अल्लाहुम्मग़फ़िरलि हाज़ल मय्यित" ओर यदि स्त्री का शव होतो "अल्लाहुम्मग़फिरलि हाज़िहिल मय्यित" कहे फिर पांचवी तकबीर कह कर शव की नमाज़ समाप्त करे।

नमाज़–ए–ईदैनः–ईद तथा बक़रीद की नमाज़ सूर्योदय से संध्या तक है। दो रकात इस प्रकार पढ़े कि पहले में पांच कुनूत तथा दूसरी में चार कुनूत पढ़कर रूकू तथा दोनों सजदे करे फिर सलाम पढ़कर नमाज़ को समाप्त करे।

नमाज़–ए–जुमा :–जुमा (शुक्रवार) की नमाज़ दो रकात है यह दोपहर को जमाअत में पढ़े।

✦✦✦